


---

Vijayate Tavepsitam

——  
विजयते तवेप्सितम्

——  
Document Information



---

Text title : Vijayate Tavepsitam

File name : vijayatetavepsitam.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : muttalapuram mohanadAsaH

Acknowledge-Permission: Muttalapuram MohanadAs

Latest update : August 11, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 12, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

Vijayate Tavepsitam

विजयते तवेप्सितम्



जगदधीश! त्वां स्तुवन्ति सकलमानवास्सदा  
निगदितो मनीषिभिश्च त्वं परात्मदैवतम् ।  
विजयते तवेप्सितं सदापि जगति निश्चितं  
सदयमातनोतु नित्यमङ्गलं दयानिधे! ॥ १ ॥

दिनकरं दिने दिने दिनात्यये निशाकरं  
पुनरसंख्यतारका विलोकयामहे दिवि ।  
अहो! विचित्रमद्भुतं त्वदीयसर्गवैभवं  
कथं नु पारयेम तस्य संस्तवाय हे प्रभो! ॥ २ ॥

सागरे समुद्धते समुन्नते च पर्वते  
द्योतते विभो! भवद्गभीरता नमोस्तु ते ।  
त्वां स्तुवन्ति कलकलं खगाश्च निम्नगाश्च भो!  
त्वां वदन्ति सर्वशक्तमिति च तत्त्ववेदिनः ॥ ३ ॥

जगदहो कियन्मनोज्ञमथ च मर्त्यजीवितं  
नियतमत्र जन्म लब्धमिति च पुण्यहेतुकम् ।  
सफलमस्तु त्वत्कृपावरेण भुवनजीवनं  
सकललोकनाथ! दुरितमोचनं विदेहि भो! ॥ ४ ॥

— श्री मुत्तलपुरं मोहनदासः ।

---

Vijayate Tavepsitam

pdf was typeset on August 12, 2024

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

